International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका

शोध छात्रा – वर्तिका वत्स
शोध निर्देशिका – डॉ० विनीता वशिष्ठ
शिक्षाशास्त्र विभाग
हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
पौढ़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड़

सारांश

आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक मानवतावादी दृष्टिकोण वाला है। वह पुनर्रचनावाद, धर्मनिरपेक्षता एवं समाजवाद को अपना रहा है। वह आज बालक का मार्गदर्शक है। सार्त्र ने निर्विधालयीकरण की सिफारिश की। इस विद्वान ने विद्यालय मृत प्रायः है, की संकल्पना देकर विद्यालय के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। इनके अनुसार शिक्षा अनौपचारिक और गैर अनौपचारिक होनी चाहिए। बालक जब सीखना चाहे, जैसे सीखना चाहे यह उसका अधिकार है। अतः यह अवसर उसे मिलना चाहिए। इसलिए आज औपचारिक शिक्षा के स्थान पर खुली शिक्षा के रूप को भी समर्थन मिला है। अत आज के शिक्षक सब कालों के शिक्षकों से भिन्न दिखाई देते है। वे विद्यार्थी से दूर रहकर भी शिक्षा देने लगे हैं।

शिक्षण व्यवसाय निःसंदेह एक आदर्श व्यवसाय है। इसलिए शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसकी भूमिकाएँ तथा उसके कार्य अधिक जिम्मेंदारीपूर्ण है. आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक के स्वरूप की संकल्पना करें तो लगता है शिक्षक वर्तमान प्रचलित शिक्षण पद्धतियों तथा कार्य प्रणाली के साथ परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप भी अपने को बना रहा है। वह शिक्षक होने के नाते एक अच्छा मार्गदर्शक बनता है। यह शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियाँ, नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है। वह प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षा, मूल्यांकन तथा अभ्यास आदि में नव तकनीकि का प्रयोग भी करता है। शिक्षक बालकों का मित्र तथा सहयोगी होने के कारण मार्गदर्शक के रूप में भूमिका अदा करता है। साथ ही विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी भूमिका निभाता है। अतः प्राचीन समय तुलना में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक बालकों के अधिक नजदीक है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राचीन काल से आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। प्रारम्भ में वह बहमा विष्णु तो कालान्तर मे धर्मगुरु बन गया। यह तो निश्चित ही है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की अद्वितीय भूमिका है। मनोविज्ञान के प्रभाव ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। एसे में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ अभिभावक, नेता, निर्देशक, सहयोगी, सलाहकार तथा निष्पक्ष निर्णायक आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है। आज शिक्षक अनेक प्रकार से बालको का सहयोग करता है।

शिक्षक नेता है जो विद्यार्थियों का नेतृत्व करता है विद्यार्थियों को सही दिशा–निर्देश देता है। समाज और समय की मांग के अनुसार विद्यालय में अनेक अनेक क्रियाओं को आयोजित करता है। विद्यार्थियों की विचार शक्ति को उत्प्रेरित करता है। अनेक प्रकार के मार्गों का उल्लेख करता है और बालक को सही रास्ता चयन कराने में सहायता करता है। बालक को समझता है। उसकी योग्यताओं, क्षमताओ का पता लगाना, उसकी रुचियों व अभिरुचियों को जानना, उसके व्यक्तित्व को पहचानना, उसके गुणों और कमियों को जानना और उनके आधार पर उसकी अध्ययन योग्यताओं का अनुमान करके सही दिशा–निर्देश देना, शिक्षक का आधारभूत काम है। शिक्षक के व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित जिस परिणाम की आशा है वह परिणाम प्राप्त करने का प्रयत्न करना शिक्षक का आधारभूत काम है।

जाति, धर्म, लिग अथवा अन्य किसी भेदभाव के बिना बालक के व्यक्तित्व को निखारना शिक्षक का आधारभूत काम है। शिक्षक समुदाय और समाज का एक सदस्य है। इसलिए समाज के मानकों के अनुरूप बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षक का काम है तथा शिक्षक का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और आधारी काम बालक के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर ध्यान देना है। इनके अतिरिक्त आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की निम्नलिखित भूमिकाएँ हैं–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. विशेषज्ञ के रूप में भूमिका
2. व्यावसायिक भूमिका
3. शिक्षक की उपभूमिकाएँ
4. अन्य संदर्भो में शिक्षक की भूमिकाएँ

(1) विशेषज्ञ के रूप में भूमिका–शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता होता है। उसे उस ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाने की कला में दक्ष होना चाहिए। उसकी योग्यता, कार्य करने की क्षमता, शिक्षण कला. विधियों की जानकारी, कौशलों की जानकारी तथा कम से कम प्रत्यन में सरलता से ज्ञान को सम्प्रेषित करना यह सब शिक्षक की विशेषज्ञ भूमिका मानी जानी चाहिए। आज केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को समझना, विषय की प्रकृति को समझना, समाज की वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को समझना और उसके अनुरूप बालक में अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास करना विशेषज्ञ की भूमिका कहलायेगी। यद्यपि विशेषज्ञ एवं व्यावसायिक भूमिका को पृथक नहीं किया जा सकता, फिर भी अपने उददेश्य (बालक) को कैसे अच्छे से अच्छा ज्ञान दिया जा सकता है, यह सब विशेषज्ञ भूमिका के अन्तर्गत आता है।

शिक्षक भी कई प्रकार के होते हैं, जैसे विषयक शिक्षक, कला शिक्षक, संगीत शिक्षक, नृत्य शिक्षक, स्वास्थ्य शिक्षक आदि। इन सबके लिए भी विशेषता जरुरी है। कार्य निर्धारण क्षेत्र के साथ उसे अपने विषय के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता हैं। अपने विद्यार्थियों और साथियों की दृष्टि को ध्यान में रखना होता है। कक्षा में सामाजिक तथा समरूप वातावरण का निर्माण करना होता है तथा समाज की मांग के अनुरूप उस विषय में किन सदों पर अधिक बल दिया जाए इसको भी उसे ध्यान रखना होता है। एक वाक्य में कहें तो प्रत्येक अध्यापक अपने विषय का विशेषज्ञ हो। विषय को बालक तक सम्प्रेषित करने के लिए जिन योग्यताओं की आवश्यकता है वे सब शिक्षक की विशेषज्ञ के रूप में भूमिकाए मानी जाती हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(2) व्यावसायिक भूमिका–शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसायों की तरह न होकर जिम्मेदारी की भूमिका वाला व्यवसाय है। जहा तक शिक्षक का प्रश्न है। यह अपने विषय को पढ़ाने वाला एक वैसा ही सदस्य है। जैसे– दूसरे व्यवसायों के लोग जिम्मेदार होते है। कैलिफोर्निया शिक्षक संघ के अनुसार आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक का प्रमुख व्यावसायिक उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को या बालकों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करने वाली भूमिका में निहित हैं। इसलिए आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक विषय शिक्षण करें, लेकिन विद्यार्थियों को पर्याप्त स्वतंत्रता दें। अनुशासन पालन करवाना उसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है जो उसके व्यवसाय के साथ जुड़ी है, किन्तु इसके साथ व्यावसायिक सहिता यह भी कहती है कि शिक्षक को स्वयं को भी अनुशासित होना चाहिए। निर्धारित समय में शिक्षण करना, विद्यालय में सौंपे गये कार्यों को पूरा करना. विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए सहगामी क्रियाओं के आयोजन की दक्षता तथा बालक के संकलित अभिलेख पत्रों का रख–रखाव अध्यापक की व्यावसायिक भूमिका के अन्तर्गत आते हैं। यहां तक कि समाज में धर्म के आधार पर यदि कोई वैमनस्य पैदा होता है अथवा अन्धविश्वास के कारण समाज में गलत परम्पराएं विकसित हो जाए तो उनको नियंत्रित एवं संसाधित करने में भी शिक्षक की व्यावसायिक भूमिका की आवश्यकता होगी।

(3) शिक्षक उपभूमिकाएँ –

स्रोत के रूप में–शिक्षक विभिन्न स्रोतों से नवीनतम एवं सही–सही सूचनाएं एकत्रित करता है और उन सूचनाओं से विद्यार्थी को अवगत करता है।

न्यायकर्ता–विद्यार्थियों के बीच होने वाले झगडों, विवादों को सुलझाता है। निर्णय करने में यह एक न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है। इसी प्रकार मूल्यांकन करते समय भी वह न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है

विद्यार्थियों का प्रतिनिधि–शिक्षक विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में भूमिका का निर्वाह करता है। जिस प्रकार समाज का नेता समाज के सदस्यों की भावनाओं को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समझाता है, उनकी इज्जत करता है, उसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शक है। वह उनकी भावनाओं को समझता है और उनके योग्य नीतियों का निर्धारण करता है।

निर्णायक–विद्यार्थियों के मध्य उत्पन्न हुए असंतोष अथवा झगड़ों के लिए वह दो पक्षों की बात को संतुलित करते हुए (रेफरी) निर्णायक की भूमिका निभाता है।

खोजी–अध्यापक विद्यार्थियों के संदर्भ में समाज की भाग और आपूर्ति के सम्बन्ध में शिक्षा विभाग और राज्य सरकार जिन योग्यताओं को विकसित करना चाहते है, उनकी दृष्टि में खोजी होना चाहिए। उसे गहराई से छानबीन करके देखना चाहिए कि किस गतिविधि का आगे क्या प्रभाव हो सकता है।

अभिभावक–वह बालकों के लिए एक अभिभावक की भूमिका निभाता है, क्योंकि अभिभावकों ने उतने समय के लिए अपने बालक को अध्यापक के हाथों में सौप दिया होता है।

समूह का नेता–अध्यापक तीन प्रकार के समूह का नेता हो सकता है– (1) विद्यार्थियों का. (2) शिक्षक साथियों का (3) समाज/समुदाय का नेतृत्व करने वाला।

इस संदर्भ में अध्यापक की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण है। बहुत से विद्यार्थी अकारण परेशान रहते है. इसलिए विद्यार्थियों को समझना और उनकी परेशानियों को दूर करना शिक्षक की भूमिका के अन्तर्गत आता है।

अहम की प्रकृति को संतुष्ट करने वाला–अनेक विद्यार्थियों में स्वयं की पहचान स्थापित करने की इच्छा रहती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करता है। यदि गलत संदर्भ में उसका अहम विकसित हुआ हो तो उसे ठीक करना और मार्गदर्शन देना शिक्षक का काम हैं जो अच्छे विद्यार्थी है उनकी उपलब्धि की प्रशंसा करना और अच्छे काम करने को प्रेरित करना आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के अहम की संतुष्टि है।

सहायक, मित्र एवं विश्वास पात्र–शिक्षक एक अच्छा मित्र, सहायक एवं विश्वास करने योग्य है। अनेक बार देखा गया है कि विद्यार्थी अपने साथ के सदस्यों से अपनी कई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बात नहीं कह पाता और शिक्षक पर वह विश्वास करता है। अतः शिक्षक को उसके विश्वास की रक्षा करनी चाहिए।

(4) अन्य संदर्भों में शिक्षक की भूमिकाएँ–शिक्षक की आधुनिक शिक्षा पद्धति में अनेक भूमिकाएं ऐसी है जो अलिखित है। जैसे–दुर्बल व असहाय वर्ग को आगे बढ़ाना, वजीफा देना और सुविधाएं जुटाने आदि की भूमिका। कभी–कभी नियमो से हटकर भी काम करना होता है, क्योंकि पूरी तरह नियम पालन किया जाए तो हो सकता है जिस बालक को लाभ मिलना चाहिए उसे ना मिले।

यहाँ उसे सामाजिक न्यायकर्ता की भूमिका निभानी पड़ती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की एक भूमिका मूल्यों के विकास की भी है। पूरा देश, बल्कि विश्व मूल्य हॉस से चिन्तित है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है। आज सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक पारम्परिक, समाजवादी, प्रजातन्त्रात्मक वैज्ञानिक और आधुनिक मूल्यों के संदर्भ में सोचना तथा शिक्षा द्वारा उन मूल्यों के विकास पर जोर देना शिक्षक की भूमिका से जुड़ गया है। समाज के उत्थान या पतन में मूल्यों का बहुत बड़ा योगदान है. इसलिए शिक्षक आधुनिक शिक्षा पद्धति में दो भूमिकाएँ निभाता है।

(1) किसी समाज के लिए किसी समय विशेष पर किन मूल्यों की आवश्यकता है, इसकी समीक्षा करना, क्योंकि समय के कारण या समाज को देखते हुए अनेक मूल्य अमान्य किए जा सकते है।

(2) इन मूल्यों का विकास कैसे किया जाए? वह शिक्षण के द्वारा तथा स्वयं के व्यवहार में उन मूल्यों को प्रदर्शित करके उनका विकास करता है। शैक्षिक यात्राए, दैनिक प्रार्थना, मित्ति पत्रिका एसे अनेक प्रयत्नों के द्वारा मूल्य विकास में शिक्षक की भूमिका होती है।

आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षकों को आवश्यक है कि उनमें राष्ट्रीय भावना हो और वे आगे अपने सामूहिक हितों का त्याग करें। अतः सबसे पहले आवश्यक यह है कि ये छात्रों में जाति, धर्म और संस्कृति आदि किसी भी आधार पर भेद न करें। सभी के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साथ समान व्यवहार करें। समान व्यवहार शिक्षक तभी कर सकता है, जब उनके हृदय में देश के सभी क्षेत्रों, सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी भाषाओं एवं सभी संस्कृतियों के प्रति आदर भाव हो। अत राष्ट्र में अनेक भिन्नताएं होते हुए भी उसकी अपनी एक पहचान होती हैं। उसका अपना राष्ट्र चिहन, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्र भाषा होती है। शिक्षकों को स्वयं इनका सम्मान करना चाहिए और छात्रों को इनका सम्मान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। राष्ट्र के सभी शिक्षकों को राष्ट्र भाषा हिन्दी सीखनी चाहिए और विद्यालय में इसका प्रयोग करना चाहिए। उन्हें अपने इस कर्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। शिक्षक की इस भूमिका के द्वारा राष्ट्रीय एकता का विकास अवश्य हो सकेगा। इस कार्य की पूर्ति हेतु शिक्षक को अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए भी प्रयास करने होंगे। परिवार, समुदाय और धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से शिक्षक राष्ट्रीय एकता के विकास में सफल होगे और इन सबसे भी अधिक उन्हें राज्य का सहयोग होना चाहिए।

अतः आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक को समाज में उत्पन्न नई समस्याओं और परिस्थितियों का अध्ययन करना चाहिए। शिक्षक द्वारा छात्रों को उनके कर्तव्यों के प्रति सचेत करना होगा। शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह छात्रों को उस उत्तरदायित्व को वहन करके योग्य बनाये, जो कि भविष्य में उसके सामने आने वाले है।

निष्कर्ष–आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक निर्देशक, अभिभावक व पथ प्रदर्शक और सहायक की भूमिका अदा करता है। शिक्षक बालक की अभिरुचियों के अनुसार शिक्षा की सामग्री का संकलन और प्रस्तुतीकरण करता है। साथ ही शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियों एवं नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है। शिक्षकों की भूमिका में सबसे पहली आवश्यकता यह भी है कि बच्चों में स्थान, जाति, धर्म, संस्कृति आदि किसी भी आधार पर भेद न करें, सबके साथ समान व्यवहार करें, उनके हृदय में देश के सभी क्षेत्रों, सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी भाषाओं और उनके साहित्यों और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सभी संस्कृतियों के प्रति उदार भाव हो तथा बच्चों में मूल्यों का विकास कर सकें इन सभी के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता का विकास संभव है।

संदर्भ सूची

1. सक्सेना, राधा रानी (2002), *''उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक''*, जयपुर : क्लासिक पब्लिकेशन्स।
2. सिंह, सुरेश (2012), *''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक''*, इलाहाबाद : अनुभव पब्लिसिंग हाउस ।
3. पाठक, आर०पी० (2010), *''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएँ''*, एवं समाधान नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स।
4. यादव, वीरेन्द्र सिंह (2013), *''भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य : चुनौतियाँ एवं समाधान की दिशाएँ''*, नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स।
5. गुप्ता, मंजू (2007), *''आधुनिक शिक्षण प्रतिरूप''*, नई दिल्ली : के०एस०के० पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स।
6 सक्सैना, एन०आर० स्वरूप (2012). *''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा''*, मेरठः आर० लाल बुक डिपो।
7. सिंह, राजेन्द्रपाल (2011), *''तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्त''*, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।